विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत **17 सितम्बर 2020**

वर्ग षष्ठ **राजेश कुमार पाण्डेय**

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

हिंदी अर्थ सहित।

षष्ठः पाठः

पुनर्मूषको भव

तदा तपः प्रभावात् तेन मुनिना मूषको बलिष्ठो विडाल कृतः।

तब तपस्या के प्रभाव से उस मुनि ने चूहा को बलवान बिल्ली बना दिया।

अथ कदाचित् कुक्कुरात् भीतः सः विडालः धावित्वा मुनेः समीपागच्छत्।

इसके बाद किसी समय कुत्ता के डर से वह बिल्ली दौड़ कर मुनि के पास आया।

विडालोऽयं कुक्कुरात् विभेति इत्यवगम्य असौ मुनिना कुक्कुरः कृतः।

यह बिल्ली कुत्ता से भी डरता है यह देख कर मुनि ने कुत्ता बना दिया।

ततः प्रभृति सः कुक्कुरः इतस्ततः निर्भयः भ्रमति स्म।

उसके बाद वह कुत्ता इधर-उधर निर्भय होकर घूम रहा था।

अथोकदा भीतः कुक्कुरः मुनेः समीपमागच्छत्।

इसके बाद एक बार बाघ से डरकर कुत्ता मुनि के पास आया।

कुक्कुरस्य व्याघ्रात् महद्भयम् इति मत्वा तेन सः व्याघ्र कृतः।

कुत्ता को बाग से डरा हुआ मानकर उसने उसे बाल बना दिया।

परं व्याघ्रमपि मूषकः निर्विशेषम् एव पश्यति सः मुनिः।

लेकिन बाघ को भी मुनि चूहा के रूप में ही देखते हैं।